निवेशक रबर में खरीदारी कर कमा सकते हैं मुनाफा

बिजनेस भास्कर • नई दिल्ली

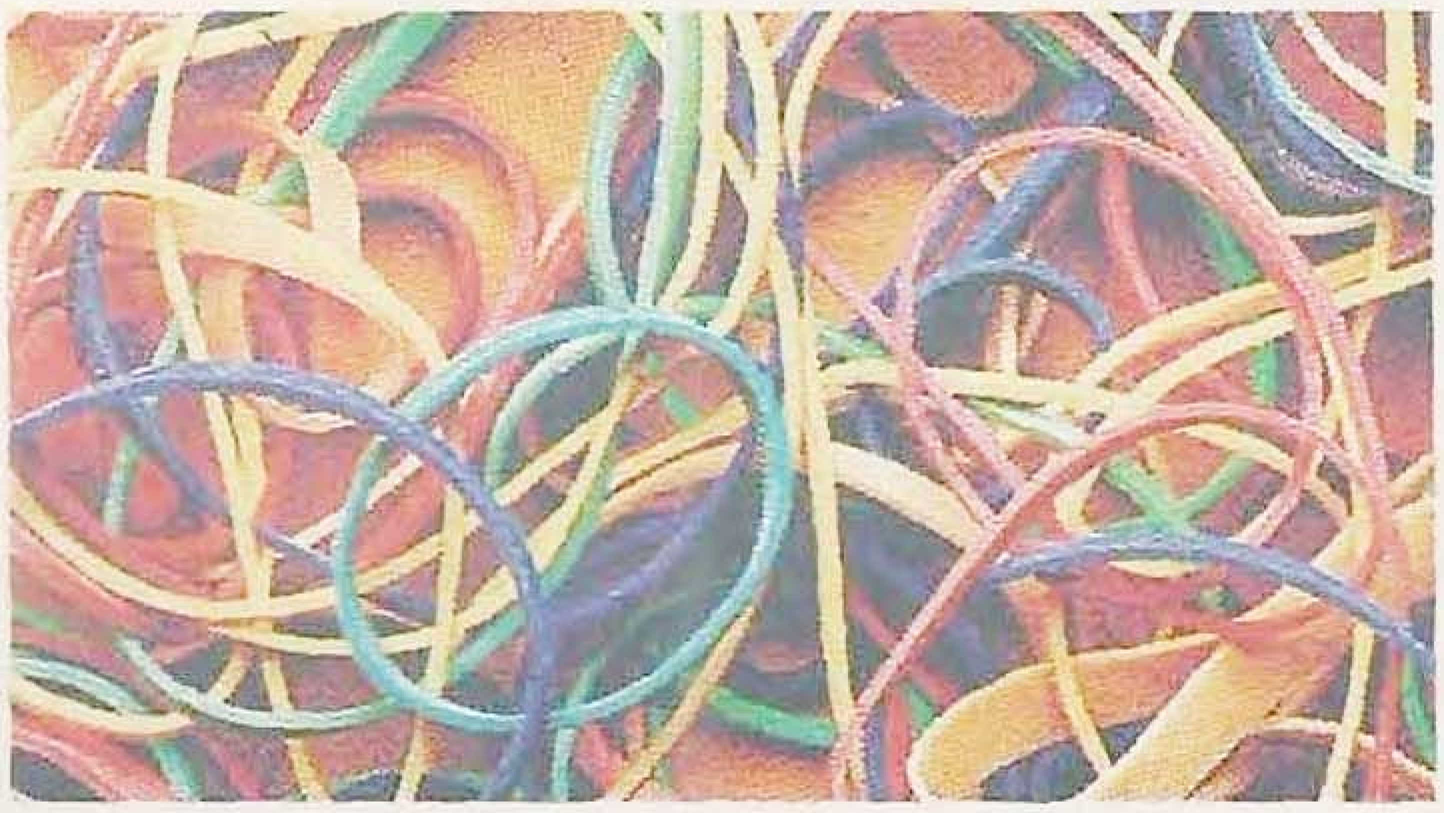

नेचुरल रबर के उत्पादन का लीन सीजन शुरू हो चुका है जबकि अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमतें भारत के मुकाबले ज्यादा है। इसीलिए आयात भी प्रभावित हो रहा है। ऐसे में निवेशक नेचुरल रबर में खरीद करके ही बेहतर मुनाफा कमा सकते हैं। चालू वित्त वर्ष में नेचुरल रबर की खपत में 2.9 फीसदी की बढ़ोतरी होने का अनुमान है। एनएमसीई पर जुलाई महीने के वायदा अनुबंध में पिछले सप्ताह भर में नेचुरल रबर की कीमतों में करीब छह फीसदी की तेजी आ चुकी है।

वायदा में गिरावट

नेशनल मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज ऑफ इंडिया लिमिटेड (एनएमसीई) पर जुलाई महीने के वायदा अनुबंध में सप्ताह भर में नेचुरल रबर की कीमतों में छह फीसदी की तेजी आ चुकी है। 28 मई को जुलाई महीने के वायदा अनुबंध में नेचुरल रबर का भाव 21,949 रुपये प्रति क्विंटल था जबकि शुक्रवार को भाव 23,280 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ। जुलाई महीने के वायदा अनुबंध में 2,322 लॉट के सौदे खड़े हुए हैं। एग्री विश्लेषक डॉ. एच. एन. सिन्हा ने बताया कि लीन सीजन शुरू होने के कारण अगले तीन महीनों तक नेचुरल रबर का उत्पादन प्रभावित होगा जबकि अंतरराष्ट्रीय बजार में दाम तेज बने हुए हैं। इसीलिए निवेशक घटे भाव पर खरीद करके मुनाफा कमा सकते हैं।

कैसे करें निवेश

वायदा बाजार में रबर में निवेश करने के लिए निवेशक को कमोडिटी ब्रोकर के यहां खाता खुलवाना होता है। खाता खुलवाने के लिए पैन कार्ड, बैंक की पास बुक, स्थायी पता और शुरुआती मार्जिन मनी की आवश्यकता होती है। रबर वायदा में सबसे ज्यादा कारोबार एनएमसीई एक्सचेंज में होता है। वायदा में नेचुरल रबर का भाव रुपये प्रति क्विंटल में चलता है जबकि लॉट साइज एक टन का होता है।

अगस्त तक उत्पादन कम रहेगा

हरिसंस मलायलम लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर पंकज कपूर ने बताया कि मानसूनी वर्षा से नेचुरल रबर की टेपिंग प्रभावित होती है। केरल में मानसून का आगमन हो चुका है इसीलिए जून से अगस्त तक नेचुरल रबर का उत्पादन प्रभावित रहेगा। वैसे भी उत्पादन के मुकाबले मांग ज्यादा बनी हुई है। इसीलिए नेचुरल रबर की मौजूदा कीमतों में तेजी की संभावना है। हालांकि उन्होंने बताया कि चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में वाहनों की बिक्री भी वित्त वर्ष 2010-11 की अंतिम तिमाही के मुकाबले कम रहेगी। बारिश के मौसम में उच्च गुणवत्ता की रबर का उत्पादन ज्यादा प्रभावित होता है इसीलिए जून से अगस्त तक आरएसएस-4 का उत्पादन कम होगा। ऐसे में उच्च क्वालिटी की रबर के दाम तेज ही बने रहने की संभावना है।

खपत में बढ़ोतरी का अनुमान

रबर बोर्ड के अनुसार वित्त वर्ष 2011-12 में नेचुरल रबर की खपत में 2.9 फीसदी की बढ़ोतरी होकर कुल खपत 9.77 लाख टन होने की संभावना है। हालांकि इस दौरान नेचुरल रबर का उत्पादन भी 4.6 फीसदी बढ़कर 9.02 लाख टन होने की संभावना है लेकिन खपत के मुकाबले उत्पादन कम है। वित्त वर्ष 2010-11 में देश में नेचुरल रबर का उत्पादन 8.61 लाख टन का हुआ था जबकि इस दौरान खपत 9.49 लाख टन की हुई है। चालू वित्त वर्ष के अप्रैल महीने में नेचुरल रबर का उत्पादन 56,800 टन का हुआ है जबकि पिछले साल अप्रैल में 53,500 टन का हुआ है। अप्रैल में नेचुरल रबर की खपत में 1.2 फीसदी की बढ़ोतरी होकर कुल खपत 82,500 टन की हुई है जबकि पिछले साल की समान अवधि में 78,250 टन की खपत हुई थी। मार्च 2011 में नेचुरल रबर की खपत 81,500 टन की हुई थी।

विदेश में भाव तेज होने से आयात घटा

ऑल इंडिया रबर इंडस्ट्रीज एसोसिएशन के चेयरमैन एम एल गुप्ता ने बताया कि भारत के मुकाबले विदेश में नेचुरल रबर की कीमतें तेज होने के कारण अप्रैल में आयात 92 फीसदी कम हुआ। अप्रैल महीने में भारत में नेचुरल रबर का कुल आयात 843 टन का ही हुआ है जबकि पिछले साल अप्रैल में 10,876 टन का आयात हुआ था। कोट्टायम में शुक्रवार को नेचुरल रबर का दाम 222 से 226 रुपये प्रति किलो रहा जबकि बैंकाक में भाव 234 रुपये प्रति किलो (भारतीय मुद्रा में) रहा। कीमतों में अंतर होने के कारण आगामी महीनों में भी आयात प्रभावित होने की संभावना है। उन्होंने बताया कि भारत में नेचुरल रबर के उत्पादन का पीक सीजन सितंबर से दिसंबर तक होता है।